>

Title: Need to revive all the forty two sugar mills in Bihar.

डॉ. भोला सिंह (नवादा): उपाध्यक्ष महोदय, बिहार सर्वधर्म समभाव की मां है परंतु बिहार चीनी उद्योग के क्षेत्र में पिछड़ गया है। वहां अंग्रेजों के जमाने में 42 चीनी मिल के कारखाने थे और आज वहां मात्र 8 कारखाने बचे हुए हैं। उत्तर बिहार में पूर्वी पश्चिमी चम्पारण, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर इत्यादि सारे हिस्सों में चीनी के कारखाने थे। मैं जिस नवादा से आता हूं, वहां पर वार्शलेगंज में चीनी का कारखाना था। उस चीनी के कारखाने में उस समय की महारानी विक्टोरिया वार्शलेगंज के चीनी मिल की चीनी खाया करती थीं। उतना स्वाद, उतनी बढ़िया चीनी दूसरी जगह प्राप्त नहीं होती थी लेकिन आज चीनी के कारखाने नहीं रहने के कारण हजारों किसानों की जिन्दगी में तुषारापात हो गया है।

उपाध्यक्ष महोदय, आज भी जिस गाड़ी से उपज का उठान किसान करते हैं, वे उसकी आज भी पूजा किया करते हैं। आज भी उस चीनी के कारखाने की मशीन के सामने जाकर इस आशा से हूक दिया करते हैं कि उनकी जिन्दगी में भी बहार आएगी और ये चीनी के कारखाने खुलेंगे। ये कारखाने इसलिए बंद हैं कि बिहार सरकार ने केन्द्र सरकार के पास प्रस्ताव भेजा कि अभी जो चीनी के कारखाने हैं और जब तक इथनॉल का उत्पादन नहीं होगा, तब तक वह वॉयबल नहीं है। इसलिए इथनॉल के उत्पादन की अनुज्ञप्ति दी जाए। इसी सदन में हमारे कृषि मंत्री श्री शरद पवार ने घोषणा की थी कि यद्यपि वे नहीं चाहते हैं लेकिन बिहार का जो प्रस्ताव है, उस प्रस्ताव को ध्यान में रखते हुए हम उन्हें अनुज्ञप्ति देने पर विचार करेंगे। मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करना चाहता हूं कि चीनी के कारखाने वार्शलेगंज में नहीं रहने के कारण 30-30, 40-45 साल की लड़कियां वहां कुंवारी हैं। उनकी शादियां नहीं हो पा रही हैं और बच्चों की पढ़ाई में भी बाधा हो रही है। इस कारण से वहां की जिन्दगी काफी मुसीबतग्रस्त और बेपनाह है। वहां पर कई तरह की दुर्भावनाएं और कई तरह की हिंसक घटनाएं हो रही हैं। लोग बेरोजगार हैं। इसलिए मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से मांग करता हूं कि बिहार सराकार का जो चीनी के कारखाने खोलने के संबंध में इथनॉल को अनुज्ञप्ति देने से संबंधित जो प्रस्ताव है, भारत सरकार उस पर विचार करे और इथनॉल की अनुज्ञप्ति दे ताकि नवादा और बिहार में फिर से खुशियां आ सके और बहार आ सके। धन्यवाद।